01 / 01 / 79 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

ब्रह्मा बाप के साथ मुक्ति गेट खोलने के लिए तैयार होने का अनुभव

➢➢ मैं आत्मा संगमयुग में साक्षी दृष्टा बन आगे बढ़ते समय को देख रही हूं

➳ _ ➳ टिक, टिक, टिक करती हुई घड़ी आगे बढ़ती जा रही है...

→ इसी के साथ उसके कांटे आगे बढ़ते जा रहे हैं...

→ संगमयुग की ये सुहानी वेला कभी भी समाप्त हो सकती है...

→ इसी के साथ मुझ आत्मा की तैयारी भी आगे जा रही है...

→ बाबा के साथ चलने का वायदा किया है...

■ संकल्प लिया है साथ जियेंगे, साथ चलेंगें...

➳ _ ➳ मेरे पिता मेरी राह देख रहे हैं, मुझे अब वापस घर जाना है...

→ मुझ आत्मा ने अपने पिता को पहचान लिया है...

→ बाप को जो जैसा है दिव्य बुद्धि, दिव्य चक्षु द्वारा जान लिया है...

→ मेरी भटकती बुद्धि को ठिकाना मिल गया है...

→ एक के साथ सर्व रिश्ते निभाना ये है ठिकाना...

→ सब बंधनो से, सब तरफ से वृत्ति द्वारा किनारा कर लिया है...

→ बाबा के सामने बैठी हूं, याद की अखंड धूनी जगा रखी है, अजपाजाप निरन्तर चल रहा है...

→ बाबा का वरदानी हाथ मेरे सर पर है जो मेरी सभी मुश्किलो को समाप्त करता जा रहा है...

■ बाबा से मुझ पर वरदानों की बरसात हो रही है, सदा सम्पन्न रहने का वरदान बाबा ने मुझे दे दिया है...

■ मेरे अंदर से क्या क्यों कि क्यू समाप्त हो चुकी है...

■ व्यर्थ का नामोनिशान मिट गया है...

■ द्रढ संकल्प द्वारा अपनी कमजोरियों को समाप्त कर दिया है....

➢➢ बाबा ने मुझ आत्मा के सर पर ज्ञान कलश रखा है...

➳ _ ➳ इस ज्ञान कलश, अमृत कलश द्वारा मैं सर्व आत्माओं की प्यास बुझाने में लग गई हूं...

→ मेरी स्वयं की प्यास भी बुझती जा रही है...

→ ज्ञान मूर्त से वरदानी मूर्त बन गयी हूं...

→ अब मेरे पुरषार्थ में कोई उदासी नही है...

→ मुझे बाबा ने सदा सम्पन्न रहने का वरदान दिया है...

■ मैं आत्मा दिल व जान, सिक व प्रेम से यज्ञ को सम्पन्न करने में लग गयी हूं...

➳ _ ➳ मैं फ़रिश्ता स्वरूप स्थिति में स्थित होती हूं...

→ मैं फ़रिश्ता बन प्यासी आत्माओं को आत्मिक परिचय दे रही हूं...

→ परमात्म परिचय की यथार्थ बूंदे दे कर उन्हें तृप्त कर रही हूं...

→ सदा इस अमृत के पान द्वारा उन्हें अमर बना रही हूं...

→ प्यासों की प्यास बुझा रही हूं...

■ इन अति कमजोर आत्माओं को स्वयं की शक्ति द्वारा समर्थ बनाकर प्राप्ति करा रही हूं...

➢➢ मैं हीरो पार्टधारी आत्मा हूं...

➳ _ ➳ मैं बापदादा का अमूल्य रत्न हूं, बाबा के दिल में रहती हूं...

→ सदा वाह बाबा वाह...

→ वाह ड्रामा वाह की स्मृति रखती हूं...

→ इससे स्वतः ही अनेको की सेवा होती जा रही है...

→ मैं नज़र से निहाल करने वाली आत्मा बन गई हूं...

- असली बाप, असली देश, असली धर्म को पहचान विश्व की आत्माएं आने लग गई हैं...
- सदा स्मृति में समर्थ स्वरूप में विजय का झण्डा लहराता जा रहा है...
- मुक्ति के गेट का उद्घाटन करने को आत्मायें तैयार होती जा रही हैं...
- बापदादा की आशाओं के दीपक चारो ओर जलने लग गए हैं...
- छोटे छोटे बेबी बॉम्ब तैयार हो कर बड़े परमात्म बॉम्ब के पास जा पहुंचे हैं...
- चारो ओर एक ही आवाज गूंज उठी है, बाबा...बाबा... हम तैयार हैं बाबा।